सरदार वल्लभभाई पटेल
राष्ट्रीय पुलिस अकादमी
हैदराबाद

स्मारिका

वर्ष 2024 - 25 अंक - 12

सत्यं सेवा सुरक्षणम

दीक्षांत परेड के अवसर पर माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय
76 आरआर बैच के आईपीएस अधिकारियों को संबोधित करते हुए

दीक्षांत परेड के अवसर पर अकादमी के निदेशक श्री अमित गर्ग
76 आरआर बैच के आईपीएस अधिकारियों को संबोधित करते हुए

सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद

स्मारिका

वर्ष 2024 - 25 अंक - 12

सत्यं सेवा सुरक्षणम

स्मारिका - 2024-25

संरक्षक	-	श्री अमित गर्ग निदेशक
संपादक	-	श्री सुरेश कुलकर्णी हिंदी अनुदेशक
संगणक संयोजक एवं टंकण सहयोग	-	श्रीमती निर्मला परमार हिंदी टंकक
आवरण एवं साज-सज्जा	-	श्री दास आनंद, ग्राफिक्स डिज़ाइनर

नोट - लेखकों के विचारों से संपादक, प्रकाशक और स.व.प. राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वर्ष - 2024-25

विषय सूची

क्रम सं	शीर्षक	विषय	लेखक	पृष्ठ सं
01	गृह मंत्री का संदेश	संदेश	--	4
02	निदेशक का सदेश	संदेश		6
03	संपादकीय	संपादकीय		7
04	पुलिस और समाज	लेख	मोहम्मद याकुब	8
05	मेरे व्यावहारिक प्रशिक्षण....	लेख	अरुणकुमार षण्मुगम	10
06	राजभाषा हिंदी के कामकाज...	लेख	श्री सुरेश कुलकर्णी	12
07	प्रेरक प्रसंग	प्रेरक प्रसंग	श्री अमृत सिंह	19
08	हिन्दी के शब्द : यत्र-तत्र...	लेख	श्री योगेश कुमार	22
09	भारत का संविधान दिवस	लेख	हिन्दी अनुभाग	24
10	विक्रमशिला विश्वविद्यालय	लेख	श्री शशि सुमन	28
11	शिक्षा और सशक्तिकरण...	कहानी	श्रीमती निर्मला परमार	30
12	कठिनाइयों से भागे नहीं...	लेख	श्री प्रकाश वाल्के	32
13	संतोष ही मनुष्य का सच्चा...	लेख	श्री महेंद्र पाल	34
14	जीवन का मूल्य	कहानी	श्री राजेश कुमार	36
15	अकादमी में राजभाषा...	रिपोर्ट	हिन्दी अनुभाग	38

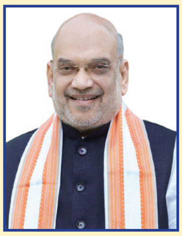

अमित शाह

गृहमंत्री एवं सहकारिता मंत्री

भारत सरकार

प्रिय देशवासियों

आप सभी को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

इस वर्ष का हिन्दी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे "राजभाषा हीरक जयंती" के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अत: हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिन्दी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सदभावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिन्दी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिन्दी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिन्दी भाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिन्दी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएंगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रन्थों, सिद्धों-नाथों, की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परंपरा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिन्दी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिन्दी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुंमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिन्दी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुये आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिन्दी अपनी

75वीं वर्षगांठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिन्दी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहां इस विभाग ने ज़िम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रदेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिन्दी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अब अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी भाषा में सम्बोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिन्दी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिन्दी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिन्दी दिवस पर “अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन” आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वां खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिये जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश “हिन्दी शब्द सिंधु” का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह “आत्मनिर्भर भारत” व “विकसित भारत” के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिन्दी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊंचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं, राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम !

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

निदेशक महोदय का संदेश....

भाषा एक संवेदनशील मुद्दा है तो संस्कृति हर भारतीय की प्राण है । हम जो शब्द बोलते हैं उससे समाज और संस्कृति स्वत: प्रभावित होती है । भाषा और संस्कृति ज्ञान के प्रसारण और सामाजिक जीवन के निर्माण में सहायक की भूमिका अदा करती है ।

भाषा हमारी अस्मिता का एक महत्वपूर्ण ज़रिया है । आग्रह है कि अपनी भाषा के महत्व को समझें और उसे प्रोत्साहित करें । हिंदी हमारे देश की एक ऐसी भाषा है, जो हमें समानता और एकता की भावना से जोड़े रखती है । हिंदी न केवल हमारी अपनी भाषा है बल्कि हमारे कामकाजी जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा भी है । हमें स्मरण रखना चाहिए कि कार्यक्षेत्र में हिंदी का उपयोग करना, सामाजिक और सांस्कृतिक संदेशो को सही से समझने में मदद करता है । इसके अतिरिक्त, सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी भाषा का सही और उचित तरीके से उपयोग हो रहा है । हमारे देश में अनेक भाषाएं एवं बोलियां उपयोग में लायी जाती है । लेकिन, आमजन में हिंदी भाषा की स्वीकार्यता अधिक है । हिंदी को सिर्फ एक भाषा के रूप मे न देखें, यह संविधान स्वीकृत और मान्यता प्राप्त राजभाषा भी है । भाषाएं सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा भी होती है, जो हम एक दूसरे से जोड़ने का कार्य करती है । अपने कार्यक्षेत्र में हम कई भाषाओं और बोलियों का प्रयोग करना सीखते हैं ।स्पष्ट है कि हमारे देश की समृद्ध भाषाएं व संस्कृति सद्भावना और विविधता को बढ़ावा देती है । समकालीन समय में हम अक्सर अपनी भाषा की महत्वपूर्ण कड़ियों को भूल जाते हैं, जिस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है । आपसे आग्रह है कि अपनी भाषा को जीवंत बनाए रखें और उसका प्रचार-प्रसार करें ।

मैं इस अवसर पर संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूं तथा पत्रिका के नियमित प्रकाशन और उत्थान की कामना करता हूं ।

जय हिन्द,

(अमित गर्ग)

अगस्त और सितंबर के महीने हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और उद्देश्यमूलक होते हैं । अगस्त महीना जहां स्वतंत्रता दिवस की खुशियों से हमें सराबोर करता है वहीं सितंबर का महीना हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में नया जोश एवं नयी स्फूर्ति का संचार करता है । ये दोनों ही दिवस हमें याद दिलाते हैं अपने संघर्ष की गाथा की । स्वतंत्रता के लिए हमारे पूर्वजों द्वारा किया गया संघर्ष देश की आज़ादी में परिणत हुआ और देश की भाषा हिंदी को स्थापित करने के लिए किए गए प्रयास आज राजभाषा के रूप में हिंदी का परचम फहराने में सफल हुए । साथियों, हमारे लिए देश की आज़ादी जितनी महत्वपूर्ण रही उतना ही महत्वपूर्ण है राजभाषा हिंदी को उसका वास्तविक दर्जा दिलाना । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने पाश्चात्य सभ्यता को तिलांजलि दे दी, सिर्फ वही उसूल और संस्कार अपनाए जो हमारे लिए अच्छे थे । भाषा के संदर्भ में भी हमने यही किया, हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया लेकिन साथ-साथ अंग्रेज़ी को भी इसलिए रहने दिया कि हिंदी स्थापित होने तक हमारा काम-काज चलता रहे । लेकिन कालांतर में अंग्रेज़ी हम पर हावी होती गई और वह दौर भी आया जब सब-कुछ अंग्रेज़ीनुमा लगने लगा था परंतु संविधान में कुछ ऐसे संशोधन किए गए जिसके चलते हिंदी को एक स्थायित्व मिला । आज हम इन्हीं नियमों और नीतियों का पालन कर रहे हैं । हर सरकारी संस्था में हिंदी अनुभाग और राजभाषा अधिकारी तथा अनुवादक नियुक्त किए गए ताकि हिंदी में काम-काज सुचारु रूप से जारी रह सके।

सरकारी दिशा निर्देश, नीति नियम, वार्षिक कार्यक्रम आदि ने तो अपनी अनन्य भूमिका निभायी है ही, विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों, फोरमों, मंचों आदि के सम्मिलित प्रयासों ने भी हिंदी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । ऐसी ही एक संस्था है चेन्नै स्थित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा जिसने हिंदी प्रशिक्षण, प्रचार, प्रसार आदि में अपनी अनुपम भूमिका निभायी है । दक्षिण भारत में आज हिंदी का जो भी वर्चस्व है उसमें जितना योगदान सरकारी संस्थाओं का है, हिंदी संगीत का है उससे भी कुछ अधिक ही दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का है । राजभाषा कार्यान्वयन की जो ज्योति हमने प्रज्ज्वलित कर रखी है वह और दैदीप्यमान और प्रकाशमान होगी, क्योंकि इसी के प्रकाश से हमारा मार्ग प्रशस्त होगा और दिशा व दशा तय होगी । कहा भी है -

चांद मिलता नहीं सबको संसार में, है दिया ही बहुत रोशनी के लिए ।

(सुरेश कुलकर्णी)

पुलिस और समाज

मोहम्मद याकुब
प्रशिक्षु अधिकारी

हमारे देश में जिस तरह सेना हमारी सुरक्षा के लिए देश की सीमाओं पर तैनात रहती है और आतंकवादियों से हमारी रक्षा करती है, उसी तरह हमारे समाज में पुलिस की भी अहम भूमिका होती है। पुलिस देश के अंदर सुरक्षा और कानून व्यवस्था का ख्याल रखती है।

समाज में किसी भी तरह के अपराध को रोकना पुलिस का कर्तव्य है। लोग अपनी सुरक्षा या किसी भी तरह की गंभीर समस्या के बारे में कभी भी पुलिस से शिकायत कर सकते हैं। आम जनता अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस से मदद मांग सकती है और अपनी सुरक्षा के लिए रिपोर्ट दर्ज करा सकती है। देश के नागरिकों की सुरक्षा करना पुलिस का परम कर्तव्य है।

देश के प्रति पुलिस के कर्तव्य

देश और समाज में लोग कानून का गंभीरता से पालन करते हैं, इसका श्रेय पुलिस को जाता है। पुलिस के बिना देश और राज्य के प्रशासन की सुरक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पुलिस हमेशा इस बात पर नज़र रखती है कि समाज में लोग कानून व्यवस्था और अनुशासन का सही से पालन करें। पुलिस अक्सर देश और कई राज्यों में महत्वपूर्ण चुनाव केंद्रों और ज़रूरतमंदों की सुरक्षा करती है।

देश में कोई भी व्यक्ति किसी के साथ गलत कर रहा हो, या कोई बदमाश किसी लड़की को छेड़ रहा हो। ऐसे में पुलिस अपराधियों को कड़े तरीके अपनाकर चुप करा देती है और उन्हें उनके अपराधों की सज़ा देती हैं।

देश में चुनाव नजदीक आते ही पुलिस देश और समाज की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी ले लेती है। पुलिस अपना काम बहुत अच्छे और कुशलतापूर्वक करती है। पुलिस की वर्दी बहुत शक्तिशाली होती हैं। पुलिस में शामिल लोगों को कठोर प्रशिक्षण दिया जाता है। वे अपराधियों को पकड़कर अदालत में पेश करते हैं। समाज में पुलिस को कानून का रक्षक कहा जाता है।

पुलिस के डर से अपराधी भाग जाते हैं, लेकिन पुलिस आखिरकार उन्हें पकड़कर सज़ा दिलाती है। अगर समाज में पुलिस न होती तो अपराध और भी तेजी से बढ़ते। समाज में चोरी, डकैती, हत्या, दंगे जैसे अपराधों पर नियंत्रण रखना और समाज में शांति बनाए रखना पुलिस का कर्तव्य और जिम्मेदारी है।

पुलिस देश की सभी संपत्तियों और सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा करती है। सभी नागरिकों के जीवन की रक्षा करना पुलिस की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। पुलिस कई बार जरूरी तलाशी अभियान में अपनी जान की बाज़ी लगा देती है। पुलिस को हर समय सतर्क और चौकन्ना रहना पड़ता है। पुलिस लोगों की जान की रक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डालती है।

पुलिस देश की कानून व्यवस्था की रक्षक है।

देश के संविधान के अनुसार नियम और कानून का पालन करना पुलिस की जिम्मेदारी है। पुलिस हर मामले को सोच समझकर और निडरता से सुलझाती है। कई बार भ्रष्ट पुलिस अधिकारी अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाते। ऐसे में कुछ भ्रष्ट पुलिस अधिकारी अपराधियों को बचाने के लिए उनसे रिश्वत लेते हैं, जो बिल्कुल गलत हैं। अगर कुछ पुलिसकर्मी भ्रष्ट निकले तो कहीं न कहीं वे पूरे पुलिस बल को बदनाम करते हैं।

ऐसे अधिकारियों के पकड़े जाते ही सरकार उन्हें सीधे निलंबित कर देती है। लोगों का पुलिस पर भरोसा होता है। समाज में रहने वाले आम लोगों में इस भरोसे को बनाए रखना पुलिस का परम कर्तव्य है। लोगों की जान और माल की रक्षा करना पुलिसकर्मियों का कर्तव्य है।

जरा सोचिए, अगर समाज में पुलिस न होती तो लोग कानून को अपने हाथ में लेकर कुछ भी कर सकते थे। समाज में चारों तरफ अराजकता का भय का माहौल होता जिसके कारण कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति पर हमला कर सकता था और समाज में अराजकता फैल जाती। समाज में ईमानदार और सच्चे नागरिक अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटते।

किसी भी देश और उसकी कानून व्यवस्था की नींव उस देश की पुलिस होती है। चुनाव के दौरान राजनेताओं की रैलियों को पुलिस सुरक्षा प्रदान करती है। राज्य की यातायात व्यवस्था का प्रबंधन यातायात पुलिस द्वारा किया जाता है। देश में सड़कों पर चलने वाले आम नागरिक को कानून का पालन कराना यातायात पुलिस का काम है। देश में विभिन्न प्रकार की हड़तालों और विरोध प्रदर्शनों के दौरान पुलिस सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा भी करती है। कई बार जुलूस के दौरान कुछ लोग पीछे से भीड़ पर पत्थर फेंकते हैं, पुलिस इससे सुरक्षा प्रदान करती है। मौसम या दिन कोई भी हो, पुलिस चौकी 24 घंटे खुली रहती है।

देश में अक्सर एक वर्ग दूसरे वर्ग पर धर्म, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव के कारण अनैतिक अत्याचार करता है। इससे कानून के नियमों का पालन नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में देश की पुलिस को कानून व्यवस्था को सुचारू रूप से संभालना होता है। पुलिस अपराधी को पकड़ती है और उसे निर्धारित सज़ा देती है।

यातायात पुलिस देश के यातायात की रीढ़ है।

ट्रैफिक पुलिस सड़क पर रोजाना लगने वाले जाम को अपने हिसाब से नियंत्रित कर सकती है। अगर सड़कों पर बहुत ज्यादा ट्रैफिक जाम होगा तो लोग समय पर अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पाएंगे। ट्रैफिक पुलिस जाम को कम करती है ताकि वाहनों की आवाजाही सुचारू रहे।

अगर कोई सड़क दुर्घटना होती है तो वह इन समस्याओं को नियंत्रित करती है। अगर कोई व्यक्ति सड़क परिवहन के नियमों का उल्लंघन करता है तो ट्रैफिक पुलिस उस पर जुर्माना लगा सकती है और अगर आप ज्यादा नियम तोड़ते हैं तो आपकी गाड़ी ज़ब्त कर सकती है। जिसे आपको पुलिस स्टेशन जाकर कानूनी कार्रवाई करके छुड़ाना होता है।

ट्रैफिक पुलिस यह भी सुनिश्चित करती है कि कोई वाहन चोरी का है या नहीं। लोगों को हेलमेट पहनकर बाइक चलाने की अनुमति होती है। अक्सर समाज और देश में लोग इन नियमों को हल्के में लेते हैं और कानून तोड़ते नजर आते हैं। ऐसे में ट्रैफिक पुलिस इन लोगों पर जुर्माना लगाती है। आज की विडंबना यह है कि पुलिस के जवान बड़े राजनेताओं और अमीर लोगों को ज्यादा सुरक्षा प्रदान करते हैं। इससे आम लोग कहीं न कहीं अपनी सुरक्षा से वंचित रह जाते हैं।

हमारे देश के पुलिस प्रशासन को सदैव सतर्क व सजग रहने की आवश्यकता है तथा समाज में दिन-प्रतिदिन हो रहे अपराधों पर अंकुश लगाने की जिम्मेदारी भी पुलिस की है।

अरुण कुमार षण्मुगम
प्रशिक्षु अधिकारी

यह एक आईपीएस प्रशिक्षु अधिकारी का प्रत्यक्ष अनुभव है, जो कानपुर नगर आयुक्तालय में ए. सी. पी. (यू/टी) के रूप में तैनात है। तमिलनाडु से आकर, मुझे न केवल पुलिस के पक्ष में, बल्कि सांस्कृतिक पक्ष में भी कई चुनौतियों और सीखने के अवसरों का सामना करना पड़ा। यह प्रशिक्षण एक आंख खोलने वाला अनुभव रहा है, जिसने कानून, प्रवर्तन, शासन और सार्वजनिक सेवा के बारे में मेरी समझ को आकार दिया है, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। जबकि एनपीए में हमें जो सिखाया गया और जो जमीन पर देखा गया उसमें बीच बहुत सारी समानताएं थी, लेकिन अंतर भी हैं।

हमारे संबंधित जिलों /आयुक्तालयों में पहुंचने से पहले, हमारा बैच राज्य पुलिस, मुरादाबाद में अकादमी के साथ एक महीने के लिए जुड़ा था। वहाँ हमें राज्य और राज्य विशिष्ट कानूनों के बारे में जानकारी मिली। अकादमी के निदेशक श्री राजीव सभरवाल, आईपीएस द्वारा साझा किया गया अनुभव हमारे लिए बहुत ही उपयोगी रहा।

शुरुआत के दिन कॉल-ऑन से भरे हुए थे, जिसमें हमें राज्य के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और अन्य नौकरशाहों से बातचीत करने का मौका मिला। इनसे से हमें पुलिसिंग के कई पहलुओं को समझने और युवा आईपीएस परिवीक्षार्थियों से क्या अपेक्षा की जाती है, यह समझने में सहायता मिली।

2 दिसंबर 2024 को कानपुर नगर आयुक्तालय में मेरी पोस्टिंग होने के बाद, मेरा फील्ड अनुभव शुरू हो गया। मेरे बैचमेट्स के विपरीत, जिनके जिलों में दो या तीन सीनियर आईपीएस अधिकारी हैं, मेरे पास कानपुर नगर कमिश्नरेट में लगभग 14 सीनियर आईपीएस अधिकारी थे। इसलिए मुझे सभी से सीखने का बहुत बड़ा मौका मिला।

दिन भर पुलिस आयुक्त कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में घूमना-फिरना, बीएनएस और तत्कालीन आईपीसी की विभिन्न धाराओं को याद करना आदि शामिल था। हर दिन एक अलग दिन था, गोपनीय कार्यालय से लेकर अपराध शाखा तक; डीसीआरबी से लेकर एलआईयू कार्यालय तक; मासिक अपराध समीक्षा बैठकों में भाग लेने से लेकर शुक्रवार की परेड में भाग लेने तक; लेखों के बारे में जानने से लेकर पूछताछ के बारे में जानने तक।

जहां मुझे डी. पी. टी. संग्रह के अनुसार निर्धारित कार्यों को पूरा करना था, वहीं मुझसे अपने वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिए गए कार्यों को पूरा करने की भी अपेक्षा की जाती थी। अनुलग्नक-एल लिखते समय, मैं कानपुर की सड़कों पर यातायात के मुद्दों पर भी अपनी टिप्पणियाँ लिख रहा था।

घुड़सवारी में मेरी रुचि के कारण, मेरी सुबह आमतौर पर पुलिस लाइन में घुड़सवारी सत्र से शुरू होती है। हम में से कई लोग आमतौर पर चरण 1 के दौरान घुड़सवारी प्रशिक्षण की प्रासंगिकता पर सवाल उठाते हैं। इसका जवाब चरण 2 में मिला। मैदानी इलाकों में, घोड़े हमें ऊंचा दृश्य देने में मदद करते हैं और यह भीड़ को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महाकुंभ के लिए प्रयागराज में गंगा नदी के किनारे घुड़सवार पुलिस की भारी तैनाती की जाती है।

मुझे डीपीटी तक पुलिस लाइन्स के महत्व का एहसास नहीं हुआ। पुलिस लाइन्स हर जिले में पुलिसिंग की लाइफलाइन है। एक रिज़र्व इंस्पेक्टर की भूमिका जिले के एसपी जितनी ही महत्वपूर्ण होती है। पुलिसिंग का लगभग हर पहलू जैसे कर्मियों का प्रशिक्षण, खरीद, भंडारण, परिवहन, जेल एस्कॉर्ट्स, संपत्तियों का प्रबंधन पुलिस लाइन्स पर निर्भर करता है।

उत्तर प्रदेश में हर शनिवार को थाना दीवान या तहसील दिवस होता है। इस दिन प्रशासन और पुलिस के अधिकारी आम नागरिकों की शिकायतों को सुनने के लिए एक साथ बैठते हैं। यह एक महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि लोगों की हर समस्या का समाधान अकेले एक विभाग नहीं कर सकता। इसके लिए सहयोग की बहुत ज़रूरत होती है। और ये शनिवार अलग-अलग विभागों को एक साथ लाकर एक बड़ा उद्देश्य पूरा करते हैं। ये वो दिन हैं जिनका मैं अपने कार्यदिवसों में बेसब्री से इंतज़ार करता हूँ।

लोगों की बात सुनने से मुझे समस्याओं की समझ हुई, पुलिस बिरादरी की बात सुनने से मुझे समाधान की समझ हुई। मेरी सीख पुलिस के रैंकों में फैली हुई है। मेरे अनुभव के दिनों में सिपाही बलों के प्रति मेरा सम्मान कई गुना बढ़ गया है।

जैसे-जैसे मेरा जिला व्यावहारिक प्रशिक्षण जारी है, मुझे उद्देश्य और जिम्मेदारी की भावना बढ़ती हुई महसूस होती है। हालांकि मुझे पता है कि अभी भी बहुत कुछ सीखना बाकी है, मैं हर उस अनुभव के लिए आभारी हूं जो मुझे एक बेहतर पुलिस अधिकारी के रूप में आकार दे रहा है। कानपुर नगर में मेरी यात्रा अभी खत्म नहीं हुई है, लेकिन इसने मुझे अमूल्य सबक दिए हैं जिन्हें मैं अपने करियर में आगे बढ़ाऊंगा।

"सपने वो नहीं होते जो हम सोते वक्त देखते हैं, बल्कि वो सपने होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।"

- एपीजे अब्दुल कलाम

सुरेश कुलकर्णी
हिंदी अनुदेशक

राजभाषा हिंदी की कार्यांवयन, प्रचार-प्रसार तथा इसके व्यावहारिक उपयोग में सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा योगदान है ।आज के समय में कम्प्यूटर का उपयोग करते समय भाषा की बाध्यता लगभग समाप्त हो गयी है । कम्प्यूटर पर काम करना बेहद आसान हो गया है । हिन्दी के अधिकतम उपयोग में हिन्दी टाइपिंग से लेकर बोलकर टाइप करने की तकनीक ने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में भी हिन्दी के उपयोग में बढ़ावा देने में मददगार साबित हुआ है ।

आज के इस दौर मेंप्रौद्योगिकी की ही देन है कि इंटरनेट पर करोड़ों लोग ब्लाग, फ़ेसबुक, व्हाट्सएप, गूगल, इन्स्टाग्राम, ट्विटर, ई- मेल, लिंक्डइन, मैसेंजर आदि के माध्यमों से एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं । गूगल के माध्यम से हम अपनी आवश्यकतानुसार बहुत सारी उपयोगी सामग्री को सर्च कर सकते हैं । इंटरनेट पर हिंदी सामग्री दिन प्रतिदिन लगातार बढ़ रहा है तथा इसका उपयोग भी काफी लोग कर रहे हैं ।

सूचना प्रौद्योगिकी में राजभाषा हिंदी की प्रगति

आज का युग सूचना, संचार व विचार का युग है । सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी प्रयोग के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया व संप्रेषण करता है । सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग मे कंप्यूटर का महत्व कल्पवृक्ष से कम नहीं है जिससे व्यवसायिक, वाणिज्यिक, जन संचार, शिक्षा, चिकित्सा, आदि कई क्षेत्र लाभांवित हुए हैं। कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो विकास हुआ है वह भाषा के क्षेत्र में भी क्रॉंति का वाहक बन कर आया है ।

अभी तक भाषा, जो केवल मनुष्यों के आवशकताओं को पूरा कर रही थी, सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग मेंउसे मशीन व कंप्यूटर की नित नई भाषायी मांगों को भी पूरा करना पड़ रहा है ।वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, सभी कार्यालयों में तमाम काम कंप्यूटरों पर ही किए जाते हैं। रोजमर्रा की जिन्दगी मानो सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित है । मोबाइल फोन, एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग से लेकर रेलवे आरक्षण, ऑनलाइन शॉपिंग, आदि । सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है । संविधान के अनुच्छेद 343के अनुसार केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, कार्यालयों, बैंकों, निगमों, उपक्रमों, विभागों आदि में देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वज़ह से हिंदी भाषा का प्रयुक्ति क्षेत्र बहुत विस्तृत है ।

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी जिसकी आत्मा कंप्यूटर है, किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है। यह सर्वज्ञात है कि कंप्यूटर में राजभाषा हिंदी में कार्य करना आज की तारीख में बहुतआसान हो गया है । वर्तमान समय में हिंदी भाषा के लिये कई संगठन कार्य कर रहें है, जैसे:- सी -डैक, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान और अनेकों गैर सरकारी संगठन ।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के तहत कार्यरत सी-डैक (पुणे) ने बाईस भाषाओं में अपनी विभिन्न

तकनीकी आयामों से वेबसाइटों, सॉफ्टवेयरों, रिपोर्टों, विभिन्न राज्यों के क्षेत्रीय भाषाओं में वेबसाइट निर्माणों, रिज़र्व बैंक के राजभाषा रिपोर्ट जेनेरेशन सॉफ्टवेयर(आरआरजीएस) निर्माण आदि के कार्य कर भाषायी एकता के क्रम में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज़ इनपुट टूल भारतीय भाषाओं हेतु एक सरल टाइपिंग टूल है। वास्तव में यह एक वर्चुअल की बोर्ड है जो कि बिना कॉपी-पेस्ट के झंझट के विंडोज में किसी भी एपलीकेशन में सीधे हिंदी में लिखने की सुविधा प्रदान करता है । यह सेवा दिसंबर 2009 में प्रारंभ हो गयी थी । यह टूल शब्दकोश आधारित ध्वन्यात्मक लिप्यांतरण विधि का प्रयोग करता है अथार्त हमारे द्वारा जो रोमन में टाइप किया जाता है, यह उसे अपने शब्दकोश से मिलाकर लिप्यांतरित करता है तथा मिलते-जुलते शब्दों का सुझाव करता है। इस कारण से प्रयोक्ता को लिपयंतरण स्कीम को याद नहीं रखना पड़ता है जिससे पहली बार एवं शुरुआती हिंदी टाइप करने वालों के लिए काफी सुविधाजनक रहता है ।

आज कंप्यूटर, मोबाइल फ़ोन, इंटरनेट, टेलीविजन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आदि हर क्षेत्र में हिंदी की मौजूदगी बढ़ती ही जा रही है जो कि एक सुखद प्रगति है। यह एक ऐसा पड़ाव है जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में पैर जमाने हैं, तो हिन्दी भाषा के पैर पकड़े बिना यह संभव नहीं। यही कारण है कि दुनिया की तमाम बड़ी कंपनियाँ अपने उत्पादों का भारतीयकरण कर रही हैं। इनमें वे कंपनियाँ भी शामिल हैं जिनके उत्पाद पहले से भारत में मौजूद हैं लेकिन उनकी मुख्य भाषा अंग्रेज़ी है।

नई वेबसाइटें अब यूनिकोड के साथ आ रही हैं तथा पुरानी वेबसाइटें ट्रू- टाइप फ़ॉन्ट से यूनिकोड में परिवर्तन कर रही हैं। यदि साहित्यिक और कुछ भाषा केंद्रित वेबसाइटों को छोड़ दिया जाए तो एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि अब ज्यादा से ज्यादा वेबसाइटें अंग्रेजी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में भी लॉन्च हो रही हैं जिनमें हिंदी प्रमुख है। पहले वेबसाइटों की भाषा केवल अंग्रेज़ी ही हुआ करती थी।

मोबाइल फोन पर हिन्दी का प्रयोग :

वर्तमान समय में मोबाइल फोन ने लैंडलाइन फोन का स्थान ले लिया है। मोबाइल फोन पर हिंदी समर्थन हेतु निरंतर कार्य चल रहा है । कई मोबाइल कंपनियाँ, सोनी, नोकिया, सैमसंग आदि हिंदी टंकण, हिंदी वाइस सर्च व हिंदी भाषा में इंटरफेस की सुविधा प्रदान कर रही है। इसके साथ ही आज आइ पैड पर हिंदी लिखने की सुविधा उपलब्ध है । मोबाइल फोन अलग-अलग ऑपरेटिंग सिस्टम से युक्त होते हैं जैसे विंडोज, एंड्रायड आदि । आजकल अधिकांश मोबाइलों में पहले से ही गूगल इंडिक की बोर्ड मौजूद रहता है । सिर्फ इसे सक्रिय करके आसानी से हिन्दी में बोलकर या लिखकर टाइप किया जा सकता है । जिस मोबाइल में यह सुविधा पहले से उपलब्ध नही है उसमे प्ले स्टोर से गूगल इंडिक की बोर्ड डाउनलोड करके आसानी से काम किया जा सकता है तथा मोबाइल के माध्यम से किसी भी सोशल साइट पर हिन्दी में संदेश भेज सकते हैं । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी के प्रचार प्रसार में मोबाइल भी एक अहम भूमिका निभा रहा है ।

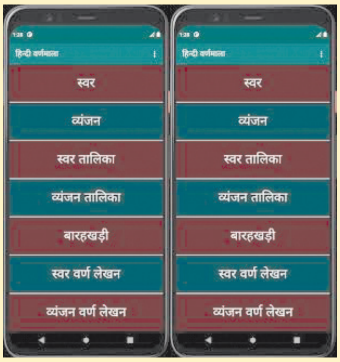

देवनागरी लिपि और सूचना प्रौद्योगिकी

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देवनागरी लिपी के मानकीकरण और संवर्धन के साथ साथ देवनागरी लिपि के मानकीकरण और संवर्धन के लिए ध्वनियोंऔर वर्णों में मैपिंग अर्थात मिलान करने की आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं की ध्वनिओं के लिए परिवर्द्धित देवनागरी लिपि विकसित करने और उसे विश्वस्तरीय लिपि के रूप मेंप्रसारित करने की ज़रूरत है।फ्रांस में “डब्ल्यू-थ्री-सी” मानकीकरण की संस्था है, जो विश्व की प्रमुख भाषाओं का प्रौद्योगिकीय दृष्टि से मानकीकरण कर रही है।इस उद्देश्य की सफलता के लिए तकनीकीविदों और भाषाविदों के बीच तालमेल की बहुत आवश्यकता है। भाषाविदों और प्रौद्योगिकीविदों को एक साथ बैठ कर इस समस्या को सुलझाना होगा। उच्चारण और वर्तनी में समन्वय भी लाना ज़रूरी है। हिन्दी की ध्वनिओं, उनके विन्यास और प्रस्तुतिकरण में देवनागरी की जो शक्ति है वह सभी भाषाओं को अपने भीतरसमेटने में सक्षम है ।

यूनिकोड :हिंदी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद अब हर एक कंप्यूटर, लैपटॉप यहाँ तक की स्मार्ट फोन पर भी हिंदी में काम करना व करवाना आसान हो गया है ।यूनिकोड अंग्रेजी भाषा के शब्द Unicode से बना है जिसका विस्तार है यूनिवर्सल कोड। यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक है जिसके आधार पर क्षेत्रीय भाषाओं के लिये फांट तैयार किये जाते हैं । हम किसी भी भाषा को एनकोडिंग व्यवस्था के तहत मानक स्वरुप प्रदान कर सकते हैं और इस आधार पर उनके फांट निर्मित किये जा सकते हैं । यह कंप्यूटर में ही उपलब्ध होता है, केवल इसको सक्रिय करना है.गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग और इलेक्ट्रॉनिकी विभाग ने कंप्यूटर में हिन्दी और अन्य भाषाओं के इस्तेमाल के लिए बनवाया ।

यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक कोड है जिसमें हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं सहित विश्व की लगभग 200 भाषाओं के लिये कोड निर्धारित किये गये हैं । हम किसी भी भाषा को एनकोडिंग व्यवस्था के तहत मानक स्वरुप प्रदान कर सकते हैं और इस आधार पर उनके फांट निर्मित किये जा सकते हैं । चूँकि कंप्यूटर मूल रूप से किसी भाषा से नहीं बल्कि बाइनरी अंकों (0,1) से संबंध रखता हैइसलिए हम किसी भी भाषा को एनकोडिंग व्यवस्था के तहत मानक रूप प्रदान कर सकते हैं ।साथ ही इसी आधार पर उनके लिये फॉण्ट भी निर्मित किये जा सकते हैं, जैसे अंग्रेज़ी भाषा अथवा रोमन लिपि के लिये एरियल फॉण्ट की एनकोडिंग की गयी है, उसी तरह हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिये निर्मित आधुनिक यूनिकोड फॉण्ट्स की भी एंकोडिंग की गयी है जिसे अंतराष्ट्रीय स्तर पर माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, एप्पल, आइबीएम,सैप, सायबेस,यूनिसिस जैसी सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की प्रमुख कंपनियों ने अपनाया है ।

हिन्दी यूनिकोड के लाभ :यह यूनिकोड की ही देन है कि आज हिन्दी में इंटरनेट तथा अन्य भारतीय भाषाओं की वेबसाइटों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है । आज इंटरनेट पर हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को समर्पित ब्लॉग्स की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है । यह यूनिकोड से ही संभव हो पाया है । आवश्यकता है मात्र इसके प्रयोग की जानकारी रखने की एवं थोड़े अभ्यास की, फिर आसानी से हिंदी में भी काम किया जा सकता है । इसके कुछ अन्य लाभ निम्नवत है :

1. आप बिना हिन्दी टाइप जाने हिन्दी में टाइप कर सकते हो ।
2. आप गूगल सर्च में हिन्दी में सर्च कर सकते हो ।
3. हिन्दी में ई-मेल भेज सकते हो ।
4. कम्प्यूटर में विभिन्न फाइल और फोल्डरों के नाम हिन्दी में रख सकते हो ।
5. हिन्दी में चैट कर सकते हो ।
6. हिन्दी में वेबसाइट या ब्लाग बना सकते हो।
7. वर्ड और एक्सेल में बिना हिन्दी फॉन्ट डाउनलोड किये हिन्दी में टाइपिंग की जा सकती है।
8. फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल नेटवर्किंग साइटपर आसानी से हिन्दी में लिखा जा सकता है।
9. यूनिकोड में लिखी किसी भी सामग्री को आसानी से दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जा सकता है।

ई-मेल/ इंटरनेट पर राजभाषा हिन्दी का प्रयोग :

हिंदी को इंटरनेट पर भारत की वेबदुनिया (http://www।webdunia।com/) नामक वेबसाइट ने सर्वप्रथम स्थान दिया। वेबदुनिया ने हिंदी में लिखने की सुविधा के साथ हिंदी में मेल, समाचार, ज्योतिष, शिक्षा आदि की सुविधाएं प्रारंभ की। दूसरी ओर इंटरनेट पर विश्व प्रसिद्ध गूगल और याहू सरीखी कंपनियों ने स्थानीयकरण के माध्यम से हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में अपनी सुविधाएँ देना शुरू किया है। गूगल लैब्स इंडिया ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए कई सुविधाजनक अनुप्रयोग उपलब्ध करवाएँ हैं। जिसमें गूगल का संपादित्र (Input Method Editor), ऑनलाइन लिप्यंतरण सुविधा, हिंदी वर्तनी जाँचक, गूगल ट्रांस्लेट, गूगल बुक्स और हिंदी में ब्लॉगर आदि सुविधाए महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के माध्यम से इंटरनेट पर हिंदी सीखने के लिए लीला सॉफ्टवेयर विकसित किया है। लीला सॉफ्टवेयर के माध्यम से हिंदी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ पाठयक्रम असमी, बांग्ला, अंग्रेज़ी, कन्नड़ मलयालम, मणिपुरी, मराठी, उड़िया तमिल, तेलुगू, पंजाबी, गुजराती, नेपाली और कश्मीरी के द्वारा इंटरनेट पर सीखे जा सकते हैं ।हिंदी में वेब पृष्ठों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। हिन्दी समाचार समूहों के साथ जुड़ कर याहू एवं गूगल ने हिंदी खबरों को देश-दुनिया तक पहुँचाया है।

अंग्रेजी के अलावा हिन्दी में भी ई-मेल दुनियां के किसी भी कोने में बिना किसी बाधा के भेजा जा सकता है, प्राप्त किया जा सकता है तथा इसे पढ़ा जा सकता है । कुछ समय पूर्व तक भारतीय भाषाओं में ई-मेल भेजने अथवा प्राप्त करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था । क्योंकि जिस फांट में ई-मेल/पत्र टाइप किया जाता था यदि मेल प्राप्तकर्ता के सिस्टम में वही फांट मौजूद नहीं है तो मेल प्राप्त होने के बावजूद भी इसे पढ़ा नही जा सकता था । वर्तमान समय मेंप्रौद्योगिकी की मदद सेहिन्दी तथा अन्य प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं के फांट यूनिकोड में तैयार कर लिया गया है तथा उपर्युक्त उल्लिखित समस्या का समाधान कर लिया गया है । भारत सरकार की वेबसाइट www.ildc.gov.in पर लॉगिन करके किसी भी भारतीय भाषा के यूनिकोड आधारित फांट नि:शुल्क अपने कम्प्यूटर पर डाउनलोड कर सकते हैं और अपना ई-मेल/पत्र यूनिकोड में टाइप करके

दुनियां के किसी भी कोने में भेज सकते हैं जहाँ आसानी से इसे पढ़ा व देखा जा सकता है ।

गूगलवाइस टाइपिंग :बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के कार्यावयन हेतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से हिन्दी टाइपिंग का बहुत बड़ा योगदान होता है । अनुवाद हो या रिकॉर्डो का संग्रहण , आदेश हो या टिप्पण लेखन, लेन-देन हो या पत्राचार सभी में टाइपिंग अनिवार्य है । हिन्दी टाइपिंग जानने वाले तथा हिन्दी टाइपिंग नहीं जानने वाले दोनो के लिए गुगल वाइस टाइपिंग बहुत उपयोगी है । इसमें प्रौद्योगिकी के माध्यम से बोलकर टाइप किया जाता है ।

उपयोग करने की विधि : यह सुविधा अभी क्रोम ब्राउजर में ही उपलब्ध है । इसे उपयोग करने की विधि निम्नवत है :

आपके कम्प्यूटर /लैपटाप से एक माइक्रोफोन जुड़ा हुआ होना चाहिए जो वर्किंग कंडिशन में हो ।

- एक जी-मेल का यूज़र आइडी -पासवर्ड होना चाहिए ।
- क्रोम ब्राउजर में http://docs.google.com ओपन करें तथा जी-मेल आइडी से लॉगिन करें ।
- गूगल डाक्स (Docs) में एक नया डाक्यूमेंट खोलें ।
- टूल्स (Tools) मेनू >वाइस टाइपिंग पर क्लिक करें ।

- पॉप-अप माइक्रोफोन बॉक्स से हिन्दी भाषा का चयन करें ।
- अब यदि हिन्दी में टाइपिंग करने के लिए तैयार हैं तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें ।
- अपना पाठ सामान्य गति से स्पष्ट रुप से बोलें । खुले हुए डाक्यूमेंट में हिन्दी टाइपिंग शुरु हो जायेगा ।
- टाइपिंग रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुन: क्लिक करें ।

टाइपिंग की गलतियों में सुधार :

बोलकर टाइप करते हुए यदि गलती हो जाए तो, गलत टाइप हुए शब्द पर कर्सर ले जाकर और माइक्रोफोन से पुन: बोलकर ठीक कर सकते हैं । गलती सुधारने के बाद, जहाँ से टाइपिंग पुन: आरम्भ करना चाहते हैं वहाँ कर्सर वापस ले जाएं तथा बोलकर टाइप करें । इस प्रकार गूगल वाइस टाइपिंग की मदद से आसानी से हिन्दी टाइपिंग कर सकते हैं ।

अनुवाद के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान :

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों से शीघ्र गति से विकास हुआ है। यह मनुष्य को सोचने विचारने और संप्रेषण करने के लिए तकनीकी सहायता उपलब्ध कराती है। सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत कंप्यूटर के साथ-साथ माइक्रोइलेक्ट्रोनिक्स और संचार प्रौद्योगिकियाँ भी शामिल है और इसके विकास का नवीनतम रूप हमें इंटरनेट, मोबाइल, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, उपग्रह प्रसारण, कंप्यूटर के रूप में दिखाई देता है। इन सबके द्वारा आज सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व को अपने आगोश में ले लिया है।कंप्यूटर टेक्नोलॉजी के अंतर्गत प्राकृतिक भाषा संसाधन के क्षेत्र में विश्व भर में अनेक विशेषज्ञ प्रणालियों का विकास किया गया है, जिनके माध्यम से कंप्यूटर साधित भाषा शिक्षण,

मशीनी अनुवाद और वाक्-संसाधन से संबंधित विभिन्न अनुप्रयोग विकसित किए गए हैं।

गूगल ट्रांसलेशन :

गूगल ट्रांस्लेट ने हिंदी अनुवाद को सरल बना दिया है।गूगल ट्रांसलेशन से अनुवाद के क्षेत्र में एक क्रांति आ गयी है । यह हिन्दी भाषी एवं हिन्दीतर भाषी दोनो के लिए समान रुप से उपयोगी है । इसमें किसी भी श्रोत भाषा से किसी भी लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जा सकता है । गूगल में एकाउंट बनाकर अनुवाद करने पर यह मेमोरी में ले लेता है जिससे भविष्य में समान टेक्स्ट आने पर सही अनुवाद करता है । हालाँकि गूगल ट्रांस्लेट द्वारा किया गया अनुवाद अभी भी पूर्ण रुप से शुद्ध तो नहीं होता है लेकिन फिर भी पहले के मुकाबले इसमें काफी हद तक सुधार हुआ है ।

लिंग्विफाई सोफ्टवयर :

लिंग्विफाई में किसी भी वेब पेज़ या इंटरप्राइज़ सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन को उसके डाटा सोर्स या डाटा बेस में बदलाव किए बिना अनुवाद करने की क्षमता है । सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकतर एवं निजी क्षेत्र के अधिकांश बैंक, बैंकिंग लेन-देन के लिए फिनैकल सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर रहे हैं । फिनैकल या बैंकिंग सॉफ्टवेयर में ऑपरेशन संबंधी अनुवाद में यह काफी प्रभावी है। बैंकिंग में पासबुक प्रिंटिंग, डिमांड ड्राफ्ट, स्टेटमेंट, धन्यवाद-पत्र इत्यादि को द्विभाषिक या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रिंटआउट प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है ।

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए सॉफ्टवेयर:

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट http://www.rajbhasha.nic.inपर राजभाषा हिंदी में कार्य करने को आसान बनाने के उद्देश्य से हिंदी में कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराए हैं, जिसमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं-

1. लीला (LILA):

लीलाअथार्त Learn Indian Languages with Artificial Intelligence, एक स्वंय शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। यह राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किया गया एक निशुल्क सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ स्तर के हिंदी के पाठयक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं जैसे कन्नड़, मल्यालम, तमिल, तेलगु, बांग्ला आदि के माध्यम से सीखने, ऑनलाइन अभ्यास, उच्चारण सुधार, स्वमूल्यांकन, आदि की सुविधा उपलब्ध है।

2. मंत्र:

मंत्रअथार्त (Machine Assisted Translation Tool) सी-डैक, पुणे के एप्लाइड आर्टिफिसिएल इंटेलिजेंस ग्रुप द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है । यह एक मशीन साधित अनुवाद है

जो राजभाषा के प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेज़ों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करता है । मंत्र राजभाषा इंटरनेट संसकरण के डिजाइन व विकास थिन क्लाइंट आर्किटेक्चर पर आधारित है, इसमें संपूर्ण अनुवाद प्रक्रिया सर्वर पर होती है, इसलिये दूरवर्ती स्थानों में भी इंटरनेट उपलब्ध लो एंड सिस्टम पर भी दस्तावेज़ों का अनुवाद करने की इस सुविधा का उपयोग किया जा सकता है । अनुवादित दस्तावेजों की पुन: प्राप्ति के लिए इसे प्रयोक्ता के इनबॉक्स में रखा जाता है ।

3. श्रुतलेखन:

श्रुतलेखनका अर्थ है सुने हुए को लिखना या सुनकर लिखना । इसमे एक व्यक्ति बोलता है तथा दूसरा उसे सुनकर लिखता है । यह एक सतत स्पीकर इंडीपेंडेंट हिंदी स्पीच रिकगनिशन सिस्टम है, जिसका विकास सीडैक, पुणे के एलाइड एआइ ग्रुप ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया गया है । यह स्पीच टू टेक्सट टूल है, इस विधि में प्रयोक्ता माइक्रोफोन में बोलता है तथा कंप्यूटर मेंमौजूद स्पीच टू टेक्स्ट प्रोग्राम उसे प्रोसेस कर पाठ/ टेक्स्ट में बदल कर लिखता है ।

4. वाचांतर :

वाचांतर, ध्वनि से पाठ में अनुवाद प्रणाली है जिसमें दो प्रौद्योगिकों का समावेश है ।यह अंग्रेज़ी स्पीच को इंपुट के तौर पर लेता है तथा मशीनी अनुवाद करके उसे हिन्दी टेक्स्ट मे बदलता है ।

5. कंठस्थ :

यह सीडैक द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है । यह राजभाषा विभाग की साइट पर उपलब्ध हिंदी ई टूल्स पर है। इस पर हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में सरलता से अनुवाद किया जा सकता है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें आपके द्वारा किया गया अनुवाद भविष्य के लिए सुरक्षित रहता है। इस में प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेज़ों का अनुवाद किया जा सकता है। इसके साथ-साथ यह शब्दकोश भी उपलब्ध करता है।

6. ई-महाशब्दकोश :

सीडैक पुणे के तकनीकी सहयोग से ई-महाशब्दकोश का निर्माण किया गया है जो की राजभाषा की साइट पर उपलब्ध है । यह एक दविभाषी-दविआयामी उच्चारण शब्दकोश हैं जिसके दवारा हिंदी या अंग्रेज़ी अक्षरों द्वारा शब्द की सीधी खोजकिया जा सकता है।

निष्कर्ष: भूमण्डलीकरण के फलस्वरुप दुनियां आज एक लैपटॉप/मोबाइल में सिमट गया है फलस्वरुप हिन्दी की पहुँच भी व्यापक हो गयी हैं तथा वर्तमान भारतीय समाज में राजभाषा हिंदी की भूमिका में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। सरकारी फाइलों और कागज़ी दस्तावेज़ों से निकल कर अब यह आम लोगों के मोबाइल और पर्सनल कंप्यूटरों तक पहुँच रही है। कहा जा सकता है कि राजभाषा हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी ने नई उर्जा का संचार किया है। वह दिन दूर नहीं है कि जब राजभाषा हिंदी में सभी नागरिक सेवाएँ और सरकारी काम करना सहज और सुलभ होगा।

अमृत सिंह
प्रधान आरक्षक

एक नवजवान शिष्य अपने गुरु के पास पहुँचा और बोला- गुरुजी ! एक बात समझ नहीं आती ! आप इतने साधारण वस्त्र क्यों पहनते हैं ? इन्हें देखकर लगता ही नहीं कि आप एक ज्ञानी व्यक्ति हैं जो सैंकड़ों शिष्यों को शिक्षित करने का महान कार्य करते हैं ! शिष्य की बात सुनकर गुरुजी मुस्कुराए और फिर उन्होंने अपनी उंगली से अंगुठी निकाली और शिष्य को देते हुए बोले - मै तुम्हारी जिज्ञासा अवश्य शांत करूंगा। लेकिन पहले तुम मेरा एक छोटा-सा काम कर दो । इस अंगुठी को लेकर बाज़ार जाओ और किसी सब्जी वाले या ऐसे ही किसी दुकानदार को इसे बेच दो......... बस इतना ध्यान रहे कि इसके बदले सोने की कम से कम एक अशरफी ज़रूर लाना ।
शिष्य फौरन उस अंगुठी को लेकर बाज़ार गया । लेकिन थोड़ी देर बाद अंगुठी वापस लेकर लौट आया । गुरुजी ने पूछा - क्या हुआ? इसे लेकर क्यों लौट आए? शिष्य ने जवाब दिया - गुरुजी, दरअसल, मैंने इसे सब्जीवाले, किरानावाले और अन्य दुकानदारों को बेचने की कोशिश की पर कोई भी इसके बदले सोने की अशरफी देने को तैयार नहीं हुआ ! इस पर गुरुजी बोले - अच्छा ! कोई बात नहीं! अब तुम इसे लेकर किसी जौहरी के पास जाओ और इसे बेचने की कोशिश करो ।

शिष्य एक बार फिर अंगुठी लेकर निकल पड़ा, पर इस बार भी कुछ ही देर में वापस आ गया । गुरुजी ने पूछा - क्या हुआ? इस बार भी कोई इसके बदले एक अशरफी भी देने के लिए तैयार नहीं हुआ? शिष्य बड़ा परेशान लग रहा था । घबराते हुए बड़े ही अजीब हाव-भाव से वह बोला - नहीं गुरुजी, ऐसी बात नहीं है । इस बार मैं जिस किसी जौहरी के पास गया, सभी ने यह कहते हुए मुझे लौटा दिया कि यहाँ के सारे जौहरी मिलकर भी इस अनमोल हीरे को नहीं खरीद सकते । इसके लिए तो लाखों अशरफियाँ भी कम है .....।

गुरुजी ने तुरंत उत्तर दिया - यही तुम्हारे सवाल का जवाब है । जिस प्रकार उपर से देखने पर इस अनमोल अंगुठी की कीमत का अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता, उसी प्रकार किसी व्यक्ति के वस्त्रों को देखकर उसे आँका नहीं जा सकता । व्यक्ति की विशेषता जानने के लिए उसे भीतर से देखना चाहिए, बाहरी आवरण तो कोई भी धारण कर सकता है । आत्मा की शुद्धता और ज्ञान का भंडार तो अंदर ही छिपा होता है । अंगुठी की कीमत किराना वालों, दुकानदारों-------- को पता नहीं थी, क्योंकि वह अंगूठी को सिर्फ उपरी तौर पर देख रहे थे । लेकिन जब तुम जौहरियों के पास गए तब उन्होंने उसकी अंदरूनी जाँचकर वास्तविक कीमत का आंकलन किया क्योंकि वे पारखी थे । शिष्य की जिज्ञासा शांत हो गई ! वह समझ गया कि बाहरी वेश-भूषा से व्यक्ति की सही पहचान नहीं होती । जो बात मायने रखती है वह है कि व्यक्ति भीतर से कैसा है?

मित्रों, आज के युग में आप क्या पहनते हैं, कैसे दिखते हैं - इसका बहुत महत्व है । कई ज्रगहों पर तो - जैसे साक्षात्कार, बैठक, कार्यक्रम आदि में तो इसका और भी ज्यादा महत्व है, पर यह सब लौकिक है । सच्चाई यह है कि बाहरी पहनावे से इंसान को आँका नहीं जा सकता । इसलिए हमें कभी भी किसी को ओछा इसलिए नहीं समझना चाहिए क्योंकि उसने अच्छे कपड़े नहीं पहने या उसका हुलिया ठीक नहीं है और किसी को इसलिए बड़ा नहीं समझना चाहिए कि वह बहुत अच्छा लिबास पहना हुआ है या उसका पहनावा बहुत अच्छा है । इंसान का असली गुण तो उसके भीतर होता है और वही उसे अच्छा या बुरा बनाता है ।

दीक्षांत समारोह 2024 विशेष गतिविधियां

दीक्षांत समारोह 2024 विशेष गतिविधियां

हिन्दी के शब्द : यत्र-तत्र-सर्वत्र

योगेश कुमार पाण्डेय
निरीक्षक

हिन्दी के विकास का सफर बहुआयामी है । यह पाया गया है कि वही भाषा विकास कर पाती है जिसमें संग्रहण की क्षमता होती है । आज यदि अंग्रेज़ी समृद्ध भाषा है तो इसका कारण यह है कि इसमें लैटिन, ग्रीक और अन्य भाषाओं से अपने शब्द भंडार को बढ़ाया गया है । इसलिए अंग्रेज़ी साहित्यकारों की रचनाओं में अनेक विदेशी शब्द देखने को मिलते हैं । हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं के साथ जो समस्या है, वह यह कि किसी भी भाषा में दूसरी भाषाओं के शब्द लेखन प्रवाह या बोलचाल में आ जाते हैं तो भाषा के शब्द प्रयोग के हिमायतियों के लिए यह असह्य हो उठता है । हिन्दी के शुद्ध प्रयोग के समर्थक इसी बद्धमूल धारणा के चलते हिन्दी में छिटके-बिखरे उर्दू, फारसी, अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं के आम-फहम शब्दों के प्रयोग का भी विरोध करते हैं । थोडी-सी ठीक भाषा बोलने पर लोग कहने लगते हैं, 'आप तो शुद्ध अंग्रेज़ी बोल रहे हैं '। अंग्रेज़ी बोलने पर कोई यह नहीं कहता कि आप शुद्ध अंग्रेज़ी बोल रहे हैं, जबकि यह पाया गया है कि अंग्रेज़ी में विदेशी शब्दों की सख्या लगभग 80 प्रतिशत है जिनमें स्कैण्डेनेवियन, फ्रेंच और लैटिन भाषाओं के शब्दों की संख्या सर्वाधिक है । इस संदर्भ में हम हिन्दी शब्दों की आवश्यकता पर विचार करें तो पाते हैं कि एशियायी भाषाओं तथा विशेषकर हिन्दी भाषा के शब्दों की सर्वाधिक है क्योंकि हिन्दी केवल भारत की ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, पश्चिमी एशिया, उत्तरपूर्व अफ्रिका के व्यापारिक केंद्रों की सार्वभौमिक भाषा रही है तथा अंग्रेज़ी भाषियों के लिए ग्राह्य भी रही है । एक अनुमान के अनुसार ऑक्सफर्ड डिक्शनरी में हिन्दी भाषा के मिलनेवाले शब्दों की संख्या तीन हज़ार से भी अधिक है । इन शब्दों का समावेश अंग्रेज़ी शब्द रचना और भाषा विज्ञान की अपनी विशिष्ट व्यवस्था के अनुसार हुआ है । उदाहरण के लिए हिन्दी और अंग्रेज़ी में प्रयुक्त अलमारी (Almirah) और तूफान (Typhoon) शब्द क्रमश: पुर्तगाली और अरबी भाषाओं के हैं । अंग्रेज़ी का 'Near' शब्द अवधी और भोजपुरी में प्रचलित ' नियर ' से मिलता जुलता है । उनके अर्थ में समानता संयोग मात्र है । परंतु बनियान, डाक, पैसा, तांगा, बरामदा जैसे शब्द हिन्दी से अंग्रेज़ी में आगत है ।

शब्दों के आदान-प्रदान में व्यापारिक संपर्कों की भी खासी भूमिका रही है । ईरान, यूरोप, अरब, चीन तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से भारत का व्यापारिक संबध बहुत पुराना रहा है । कहते हैं, अरबों के उदय से पहले व्यापार के समुद्री मार्गों पर भारतीयों का एकाधिकार था । वे नावों में सामान लादकर इन देशों में जाते थे तथा अनेक जगहों पर बस भी जाते थे । इनके ज़रिए हिन्दी व भारतीय बोलचाल

के शब्द भी उपर्युक्त देशों तक फैले । यहाँ आए यात्रियों तथा लेखक हेरोडोटस, मैगस्थनीज, प्लिनी आदि ने भारत के बारे में काफी कुछ लिखा है । उनके आलेखों में अनेक भारतीय तथा बोलचाल के शब्द, पदार्थों के नाम इत्यादि प्रयुक्त हुए हैं । इनके माध्यम से भारतीय शब्द ग्रीक, लैटिन, अंग्रेज़ी तथा यूरोप की अन्य भाषाओं में पहुंचे हैं । अरबों ने भारत पर समुद्री हमले किए तथा पश्चिमी तट पर बस्तियाॅ बसायीं और हिंद महासागर का सारा व्यापार अपने हाथों में केंद्रित कर लिया । इस तरह व्यापार के साथ-साथ वे भारतीय समाज में व्यवहृत शब्दों के प्रसारक भी बने । भार, बनिया, बाज़ार,

बैंगन, जोगी, खिचड़ी, काजी, किमखाब आदि शब्द अरबों ने ही दक्षिण पूर्व एशिया तथा यूरोप के देशों में फैलाए । पूर्तगालियों के भी यहाॅ व्यापार के लिए पहॅुचने का परिणाम यह हुआ कि हिंदी मिश्रित ‘ इंडोंपुर्तगीज़’ बोली का विकास हुआ। इस बोली के माध्यम से पालकी, पंजी, मंत्री, मानसून, तूफान, कढ़ी, छाप, कंघी नवाब तथा,खोपड़ा आदि अनेक शब्द यूरोप की भाषाओं में पहुँचे । भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के साथ ही अंग्रेज़ी के पॉव जमने लगे थे । केपनी अधिकारियो के भारतीय माहौल में रहने का प्रभाव यह पड़ा कि वे इंग्लैंड के प्रधान मंत्री एडमंड बर्क को जो भी भारत विषयक पत्र लिखते थे, उसमें भारतीय शब्दों के बाहुल्य के कारण यह संसद सदस्यों के लिए बोधगम्य नहीं है । चूंकि अंग्रेज़ी का ध्यान सत्ता पर काबिज़ रहने के साथ भारत व्यापारिक स्रोतों पर भी अधिकार बनाए रखना था, अत: व्यापार संबंधी शब्दावली का अंग्रेज़ी में प्रचुर संख्या में समावेश हुआ । इन शब्दों में हैं छींट (Chintz), खाट(Cot), धोती(Dhoti), घी(Ghee), डोली(Doolie), लाख(Lakh), चौकी(Chowkey), पक्का(Pucca), कचहरी(Cutcherry), पंच(Punch), बंगला(Bunglow), पगड़ी(Puggree), मसक(Mussuck), करोड़(Crore), पैसा(Pice), कच्चा(Kutcha),दरबार(Durbar), घाट(Ghat), आदि । अंग्रेजी राजनीतिक गतिविधियाॅ भारत बढ़ने के साथ अंग्रेज़ी में हिन्दी के राजनीतिक, प्रशासनिक तथा सेना संबंधी शब्दों की संख्या बढ़ती गयी । अंग्रेज़ी के पूर्व चूंकि यहा मुगल शासक सत्ता में थे, अत: अंग्रेज़ में फारसी, अरबी के शब्द में बहुतायत मे शामिल हुए । जेसे सुलतान (Sultan), हमाम (Hamam), निज़ाम (Nizam), बाबु (Baboo), जंगल (Jungle), ठग (Thug), पायजामा (Pyjama), चटनी (Chutney), जनाना (Zanana), कारवाॅ (Carvan), हकिम (Hakim), रिसालदार (Risaldar), मुंशी (Munshi), जूट (Jute), डकैत (Dacoit), लूट (Loot), सिपाही (Sepoy), पर्दा (Purdhah), कहवा (Coffee) आदि ।

भारतीय स्वतंत्रता के लिए चलाए गए आंदोलन के दौरान स्वराज, सत्याग्रह, स्वदेशी, गांधीवाद, खद्दर, हड़ताल, धरना, ज़िंदाबाद, अहिंसा जैसे शब्द अंग्रेज़ी में अपनाए गए । अंग्रज़ी में हिन्दी के शब्द कई स्रोतों से पहुँचे हैं । इनकी संख्या हज़ारों में हैं । आज इन शब्दों के मूल स्रोतों का निश्चित रूप से पता लगा पाना भी कठिन है । परंतु प्रचलन के लिहाज से इनमें से कम शब्द ही अंग्रेज़ी की स्थायी शब्दावली का अंग बन सके हैं । ज्यादातर एक विशिष्ट कालावधि के बाद प्रचलन में नहीं रहे । फिर भी हिंदी, फारसी, अरबी व अन्य भाषाओं से हिन्दी तथा तदनंतर अंग्रेजी में शब्दों की संख्या काफी है जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग किया जाता है ।

"संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज़ नहीं है; यह जीवन का वाहन है, और इसकी भावना हमेशा युग की भावना होती है।" **- डॉ. बी. आर. अंबेडकर**

- 26 नवम्बर को भारत अपनी 75वीं संविधान दिवस, या समविधान दिवस, मना रहा है, ताकि देश की लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और स्वतंत्र पहचान को सम्मानित किया जा सके।
- संविधान दिवस भारत में हर वर्ष 26 नवम्बर को मनाया जाता है, ताकि 1949 में संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान को अपनाए जाने की याद ताजा की जा सके।
- संविधान26 जनवरी 1950 को लागू हुआ, जिसे गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- 19 नवम्बर 2015 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने भारत सरकार के निर्णय की घोषणा की थी कि हर वर्ष 26 नवम्बर को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाया जाएगा, ताकि नागरिकों में संविधान के मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके।

भारत के संविधान दिवस 2024: महत्व

- भारतीय संविधान दिवस संविधान के आदर्शों, अधिकारों और प्रतिबद्धताओं के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देता है, जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और राष्ट्रीय एकता पर जोर देता है।
- यह दिन भारत की यात्रा को दर्शाता है, लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को पुनः पुष्टि करता है, और एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना में संविधान सभा की भूमिका का सम्मान करता है।
- संविधान दिवस नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और भारत की एक प्रगतिशील, समावेशी और समान समाज के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

- भारतीय संविधान का इतिहास
- 1935 का भारत सरकार अधिनियम भारत के शासन का आधार था, लेकिन इसमें एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य के लिए प्रावधान नहीं थे।
- भारतीय संविधान को संविधान सभा द्वारा तैयार किया गया था, जिसे 1946 के कैबिनेट मिशन योजना के तहत स्थापित किया गया था।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसम्बर 1946 को हुई थी, और डॉ. सचिदानंद सिन्हा, जो सभा के सबसे वरिष्ठ सदस्य थे, को अस्थायी अध्यक्ष चुना गया।
- 11 दिसम्बर 1946 को संविधान सभा ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को अपना स्थायी अध्यक्ष चुना।
- संविधान सभा ने संविधान तैयार करने के लिए 13 समितियाँ बनाई, जिनमें डॉ. बी. आर. अंबेडकर की अध्यक्षता में एक ड्राफ्टिंग समिति भी शामिल थी।
- इन समितियों की रिपोर्टों के आधार पर, संविधान का प्रारूप सात सदस्यीय ड्राफ्टिंग समिति द्वारा तैयार किया गया। ड्राफ्टिंग समिति के सदस्य थे:

1. डॉ. बी. आर. अंबेडकर (अध्यक्ष)

2. एन. गोपालस्वामी अय्यंगर
3. अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर
4. डॉ. के. एम. मुंशी
5. सैयद मोहम्मद सादुल्लाह
6. एन. माधव राव (इन्हें बी. एल. मिटर के स्थान पर नियुक्त किया गया)
7. टी. टी. कृष्णमाचारी (इन्हें डी. पी. खैतान के स्थान पर नियुक्त किया गया)

- ड्राफ्टिंग समिति को अपना प्रारूप तैयार करने में छह महीने से भी कम समय लगा। कुल मिलाकर समिति ने केवल 141 दिन बैठकी की।
- यह दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान है, जिसमें 395 अनुच्छेद, 8 अनुसूचियाँ और एक प्रस्तावना थी, जबकि अब इसमें 448 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियाँ हैं।

संविधान सभा की प्रमुख समितियाँ

- संघ शक्ति समिति: जवाहरलाल नेहरू
- संघ संविधान समिति: जवाहरलाल नेहरू
- प्रांतीय संविधान समिति: सरदार पटेल
- ड्राफ्टिंग समिति: डॉ. बी. आर. अंबेडकर
- मौलिक अधिकार उप-समिति: जे. बी. कृपालानी
- कार्यवाही नियम समिति: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- राज्यों की समिति (राज्यों के साथ वार्ता करने वाली समिति): जवाहरलाल नेहरू
- संचालन समिति: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- महत्वपूर्ण तथ्य
- भारतीय संविधान को टाइपसेट या मुद्रित नहीं किया गया था, बल्कि यह दोनों भाषाओं, अंग्रेजी और हिंदी में हस्तलिखित और कॅलिग्राफिक था।
- इसे शांति निकेतन के कलाकारों द्वारा पूरी तरह से हाथ से बनाया गया था, जिसमें कॅलिग्राफी का काम प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा ने दिल्ली में किया था।
- हाथी को संविधान सभा का प्रतीक चुना गया था।
- ब्योहार राममनोहर सिन्हा ने मूल प्रस्तावना को प्रकाशित, सजाया और अलंकृत किया था, जिसे प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा ने कॅलिग्राफ किया था।
- हिंदी संस्करण के मूल संविधान की कॅलिग्राफी का काम वसंत कृष्ण वैद्य ने किया था।

महत्वपूर्ण संशोधन:

- पहला संशोधन अधिनियम, 1951
  - नौवीं अनुसूची में भूमि सुधार और अन्य कानूनों को न्यायिक समीक्षा से सुरक्षा प्रदान करना।

- सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान बनाने के लिए राज्य को सक्षम बनाना।
- अनुच्छेद 31A और 31B का समावेश।

- 7वां संशोधन अधिनियम, 1956 राज्यों की मौजूदा वर्गीकरण को समाप्त करना और उन्हें 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों में पुनर्गठित करना।
- 24वां संशोधन अधिनियम, 1971
  - संसद की शक्ति की पुष्टि कि वह संविधान के किसी भी भाग को संशोधित कर सकती है, जिसमें मौलिक अधिकार भी शामिल हैं।
  - राष्ट्रपति को संविधान संशोधन विधेयक पर अपनी स्वीकृति देना अनिवार्य बना दिया गया।
- 42वां संशोधन अधिनियम, 1976 (जिसे मिनी संविधान भी कहा जाता है)
  - संविधान के प्रस्तावना में'समाजवादी', 'धर्मनिरपेक्ष' और 'अखंडता' शब्दों का समावेश किया गया।
  - नागरिकों के लिए मौलिक कर्तव्यों का समावेश (नया भाग IV-A)।

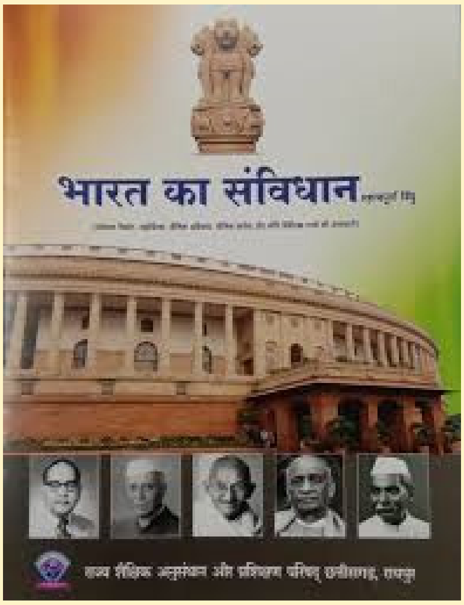

  - समान न्याय और मुफ्त कानूनी सहायता, उद्योगों के प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी, और पर्यावरण, वन और वन्यजीवों की रक्षा के लिए तीन नए निर्देशात्मक तत्व जोड़े गए।
  - राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा को भारत के क्षेत्र के किसी हिस्से में सरल किया गया।
  - संविधान संशोधन को न्यायिक समीक्षा से बाहर किया गया।
- 44वां संशोधन अधिनियम, 1978
  - 44वें संशोधन अधिनियम में, सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालयों की कुछ शक्तियाँ बहाल की गई।
  - राष्ट्रीय आपातकाल के लिए "आंतरिक विघटन" शब्द को बदलकर "सशस्त्र विद्रोह" किया गया।
  - राष्ट्रपति को राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा केवल मंत्रिमंडल की लिखित सिफारिश पर ही करने का अधिकार दिया गया।

हालिया संशोधन

- 103वां संशोधन अधिनियम, 2019
  - राज्य को किसी भी आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान करने का अधिकार दिया।
- 104वां संशोधन अधिनियम, 2020

- लोकसभा और राज्य विधानसभा में एंग्लो-इंडियन समुदाय के लिए आरक्षित सीटों को हटा दिया गया।

- 105वां संशोधन अधिनियम, 2021
  - राज्यों को ओबीसी (OBCs) की पहचान करने का अधिकार बहाल किया गया।
- 106वां संशोधन अधिनियम, 2023
  - इसे महिला आरक्षण अधिनियम, 2023 (नारी शक्ति वंदन अधिनियम) के रूप में जाना जाता है, जिसका उद्देश्य लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% सीटों को आरक्षित करना है।

(हिन्दी अनुभाग)

"आपके सपनों को हासिल करने के लिए होने वाली कठिनाइयों का सामना करें।"

- स्वामी विवेकानंद

शशि सुमन
एमटीएस

आज मुझे अपने जिले के बारे में बताते हुए बहुत गर्व महसूस हो रहा है।
नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में तो आप सभी जानते हैं, आइए आज विक्रमशिला के बारे में जानें। जो की बिहार के भागलपुर जिले में स्थित है।

विक्रमशिला भारत का एक प्रसिद्ध शिक्षा-केन्द्र (विश्वविद्यालय) था। नालन्दा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला दोनों पाल राजवंश के राज्यकाल में शिक्षा के लिए जगत्प्रसिद्ध थे। वर्तमान समय में बिहार के भागलपुर जिले का अन्तिचक गाँव वहीं है जहाँ विक्रमशिला थी। इसकी स्थापना 8वीं शताब्दी में पाल राजा धर्मपाल ने की थी प्रसिद्ध पण्डित अतीश दीपंकर यहीं शिक्षण करते थे।

यहाँ पर लगभग 160 विहार थे, जिनमें अनेक विशाल प्रकोष्ठ बने हुए थे। विद्यालय में सौ शिक्षकों की व्यवस्था थी। नालन्दा की भाँति विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी बौद्ध संसार में सर्वत्र सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इस महाविद्यालय के अनेक सुप्रसिद्ध विद्वानों में अतिश दीपांकर श्रीज्ञान प्रमुख थे। ये ओदन्तपुरी के विद्यालय के छात्र थे और विक्रमशिला के आचार्य। 11वीं शती में तिब्बत के राजा के निमंत्रण पर ये वहाँ पर गए थे। तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में इनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है।

मान्यता है कि बख्तियार खिलजी नामक मुस्लिम आक्रमणकारी ने सन 1993 के आसपास इसे नष्ट कर दिया था। इस विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के तुरन्त बाद ही अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त कर लिया था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रख्यात विद्वानों की एक लम्बी सूची है। तिब्बत के साथ इस शिक्षा केन्द्र का प्रारम्भ से ही विशेष सम्बंध रहा है। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में विद्याध्ययन के लिए आने वाले तिब्बत के विद्वानों के लिए अलग से एक अतिथिशाला थी। विक्रमशिला से अनेक विद्वान तिब्बत गए थे तथा वहाँ उन्होंने कई ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया। इन विद्वानों में सबसे अधिक प्रसिद्ध दीपंकर श्रीज्ञान थे जो उपाध्याय अतीश के नाम से विख्यात हैं। विक्रमशिला का पुस्तकालय बहुत समृद्ध था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में बारहवीं शताब्दी में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 3000 थी। विश्वविद्यालय के कुलपति भिक्षुओं के एक मण्डल की सहायता से प्रबंध तथा व्यवस्था करते थे। कुलपति के अधीन 4 विद्वान द्वार-पण्डितों की एक परिषद प्रवेश लेने हेतु आये विद्यार्थियों की परीक्षा लेती थी।

इस विश्वविद्यालय में व्याकरण, न्याय, दर्शन और तंत्र के अध्ययन की विशेष व्यवस्था थी। इस विश्वविद्यालय की व्यवस्था अत्यधिक सुसंगठित थी। बंगाल के शासक शिक्षा की समाप्ति पर विद्यार्थियों को उपाधि देते थे। सन 1203 ई० में बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया। यहाँ बौद्ध धर्म और दर्शन के अतिरिक्त न्याय, तत्वज्ञान, व्याकरण आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती थीं तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान विद्वान आचार्यों द्वारा किया जाता था। यहाँ देश से ही नहीं विदेशों से भी विद्याध्ययन के लिए छात्र आते थे। शिक्षा समाप्ति के बाद विद्यार्थी को उपाधि प्राप्त होती थी जो उसके विषय की दक्षता का प्रमाण मानी जाती थी। पूर्व मध्ययुग में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के अतिरिक्त कोई शिक्षा केन्द्र इतना महत्त्वपूर्ण नहीं था कि सुदूर प्रान्तों के विद्यार्थी जहाँ विद्या अध्ययन के लिए जाएँ। इसीलिए यहाँ छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी। यहाँ के अध्यापकों की संख्या ही 3000 के लगभग थी अतः विद्यार्थियों का उनसे तीन गुना होना तो सर्वथा स्वाभाविक ही था। इस विश्वविद्यालय के अनेकानेक विद्वानों ने विभिन्न ग्रंथों की रचना की, जिनका बौद्ध साहित्य और इतिहास में नाम है। इन विद्वानों में कुछ प्रसिद्ध नाम हैं- रक्षित, विरोचन, ज्ञानपाद, बुद्ध, जेतारि रत्नाकर शान्ति, ज्ञानश्री मिश्र, रत्नवज्र और अभयंकर। दीपंकर नामक विद्वान ने लगभग 200 ग्रंथों की रचना की थी। वह इस शिक्षाकेन्द्र के महान प्रतिभाशाली विद्वानों में से एक थे। अब इस विश्वविद्यालय के केवल खण्डहर ही अवशेष हैं।

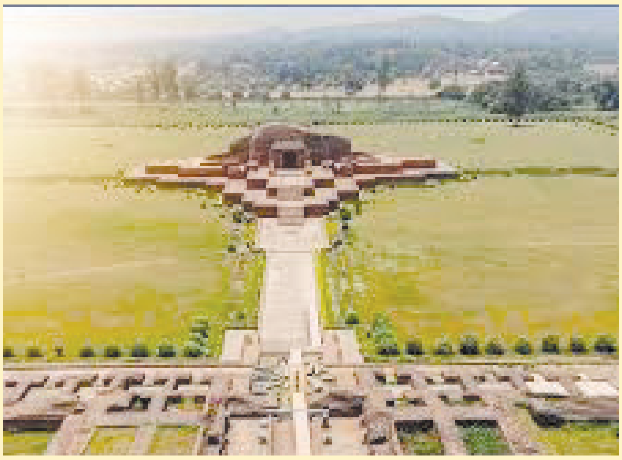

कुछ विद्वानों का मत है कि इस विश्वविद्यालय की स्थिति वहाँ थी जहाँ वर्तमान समय में कहलगाँव रेल स्टेशन (भागलपुर नगर से 19 मील दूर) स्थित है। कहलगाँव से तीन मील पूर्व गंगा नदी के तट पर 'बटेश्वरनाथ का टीला' नामक स्थान है, जहाँ पर अनेक प्राचीन खण्डहर पड़े हुए हैं। इनसे अनेक मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जो इस स्थान की प्राचीनता सिद्ध करती हैं। अन्य विद्वानों के विचार में विक्रमशिला, ज़िला भागलपुर में पथरघाट नामक स्थान के निकट बसा हुआ था।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ न्याय, तत्वज्ञान एवं व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी। 12वीं शती में यह विश्वविद्यालय एक विराट् शिक्षा-संस्था के रूप में प्रसिद्ध था। इस समय में यहाँ पर तीन सहस्र विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए समुचित व्यवस्था थी। संस्था का एक प्रधान अध्यक्ष तथा छः विद्वानों की एक समिति मिलकर विद्यालय की परीक्षा, शिक्षा, अनुशासन आदि का प्रबन्ध करती थी। 1203 ई. में मुसलमानों ने जब बिहार पर आक्रमण किया, तब नालन्दा की भाँति विक्रमशिला को भी उन्होंने पूर्णरूपेण नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। बख़्तियार ख़िलजी ने 1202-1203 ई. में विक्रमशिला महाविहार को नष्ट कर दिया था। यहाँ के विशाल पुस्तकालय को आग के हवाले कर दिया था, उस समय यहाँ पर 160 विहार थे जहां विद्यार्थी अध्ययनरत थे। इस प्रकार यह महान विश्वविद्यालय, जो उस समय एशिया भर में विख्यात था, खण्डहरों के रूप में परिणत हो गया।

खुदाई कार्य

विक्रमशिला के बारे में सबसे पहले राहुल सांकृत्यायन ने सुल्तानगंज के निकट होने का अंदेशा प्रकट किया था। उसका मुख्य कारण था कि अंग्रेज़ों के जमाने में सुल्तानगंज के निकट एक गांव में बुद्ध की प्रतिमा मिली थी। बावजूद उसके अंग्रेज़ों ने विक्रमशिला के बारे में पता लगाने का प्रयास नहीं किया। इसके चलते विक्रमशिला की खुदाई पुरातत्त्व विभाग द्वारा 1986 के आसपास शुरू हुई।

निर्मला परमार

हिन्दी टंकक

एक दिन, एक कंपनी में इंटरव्यू के दौरान, बॉस, अनिल, ने सामने बैठी महिला, कावेरी से पूछा, आप इस नौकरी के लिए कितनी तनख्वाह की उम्मीद करती हैं ? कावेरी ने बिना किसी झिझक के आत्मविश्वास से कहा, “कम से कम 80,000 रुपये। अनिल ने उसकी ओर देखा और आगे पूछा, “आपको किसी खेल में दिलचस्पी है ? कावेरी ने जवाब दिया, जी, मुझे शतरंज खेलना पसंद है।

अनिल ने मुस्कुराते हुए कहा, शतरंज बहुत ही दिलचस्प खेल है। चलिए, इस बारे में बात करते हैं। आपको शतरंज का कौन सा मोहरा सबसे ज्यादा पसंद है ? या आप किस मोहरे से सबसे अधिक प्रभावित हैं? कावेरी ने मुस्कुराते हुए कहा, वज़ीर। अनिल ने उत्सुकता से पूछा, “क्यों ? जबकि मुझे लगता है कि घोड़े की चाल सबसे अनोखी होती है।” कावेरी ने गंभीरता से जवाब दिया, “वास्तव में घोड़े की चाल दिलचस्प होती है, लेकिन वज़ीर में वो सभी गुण होते हैं जो बाकी मोहरों में अलग-अलग रूप से पाए जाते हैं। वह कभी मोहरे की तरह एक कदम बढ़ाकर राजा को बचाता है, तो कभी तिरछा चलकर हैरान करता है, और कभी ढाल बनकर राजा की रक्षा करता है।”

अनिल ने उसकी समझ से प्रभावित होते हुए पूछा, “बहुत दिलचस्प ! लेकिन राजा के बारे में आपकी क्या राय है ?” कावेरी ने तुरंत जवाब दिया, “सर, मैं राजा को शतरंज के खेल में सबसे कमजोर मानती हूँ। वह खुद को बचाने के लिए केवल एक ही कदम उठा सकता है, जबकि वज़ीर उसकी हर दिशा से रक्षा कर सकता है।” अनिल, कावेरी के जवाब से प्रभावित हुआ और बोला, “बहुत शानदार ! बेहतरीन जवाब। अब ये बताइए कि आप खुद को इनमें से किस मोहरे की तरह मानती हैं?” कावेरी ने बिना किसी देर के जवाब दिया, राजा।

अनिल थोड़ी हैरानी में पड़ गया और बोला, “लेकिन आपने तो राजा को कमज़ोर और सीमित बताया है, जो हमेशा वज़ीर की मदद का इंतजार करता है। फिर आप क्यों खुद को राजा मानती हैं ? कावेरी ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, जी हाँ, मैं राजा हूँ और मेरा वज़ीर मेरा पति था। वह हमेशा मेरी रक्षा मुझसे बढ़कर करता था, हर मुश्किल में मेरा साथ देता था, लेकिन अब वह इस दुनिया में नहीं है। अनिल को यह सुनकर थोड़ा धक्का लगा, और उसने गंभीरता से पूछा, “तो आप यह नौकरी क्यों करना चाहती हैं?

कावेरी की आवाज़ भर आई, उसकी आँखें नम हो गईं। उसने गहरी सांस लेते हुए कहा, क्योंकि मेरा वज़ीर अब इस दुनिया में नहीं रहा। अब मुझे खुद वज़ीर बनकर अपने बच्चों और अपने जीवन की जिम्मेदारी उठानी है। यह सुनकर कमरे में एक गहरी खामोशी छा गई। अनिल ने तालियाँ बजाते हुए कहा, बहुत बढ़िया, कावेरी । आप एक सशक्त महिला हैं।

यह कहानी उन सभी बेटियों के लिए एक प्रेरणा है जो ज़िंदगी में किसी भी तरह की मुश्किलों का सामना कर सकती हैं। बेटियों को अच्छी शिक्षा और परवरिश देना बेहद ज़रूरी है, ताकि अगर कभी

उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े, तो वे खुद वज़ीर बनकर अपने और अपने परिवार के लिए एक मज़बूत ढाल बन सकें। किसी विद्वान ने कहा है, एक बेहतरीन पत्नी वह होती है जो अपने पति की मौज़ूदगी में एक आदर्श औरत हो, और पति की गैरमौज़ूदगी में वह मर्द की तरह परिवार का बोझ उठा सके।

यह कहानी हमें सिखाती है कि जीवन में परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, अगर आत्मविश्वास और समझदारी हो, तो कोई भी मुश्किल हालात को पार किया जा सकता है।

"काम में प्यार और पूरी ईमानदारी के साथ काम करें, सफलता आपकी कदमों में आएगी।"

- सुनील भट्ट

कठिनाइयों से भागे नहीं सामना करें

प्रकाश वाल्के,

सेवानिवृत एलआईओ

“आप ही हो अपने जीवन के शिल्पकार”

अकसर हम यह देखते है कि लोग परिस्थितियों से परेशानियों से घबरा कर भाग जाते है। अर्थात उनका सामना नहीं करते पर घबराकर भाग जाना तो बहुत आसान है, यह तो कोई भी कर सकता है। यह सर्वविदित है कि मनुष्य के जीवन में कई सारे उतार-चढ़ाव आते है जो कभी सुखद तो कभी दुखद होते है।

विश्व के वर्तमान हालातों को देखते हुए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी की चारों ओर प्रतिकूलताएं ज्यादा है और उनसे निपटने की क्षमता, शक्तियाँ बहुत कम है, किन्तु ऐसे माहौल के बीच भी हमें यह बात भुलनी नहीं चाहिए कि जिस प्रकार के रात्रि के अंधकार से दिन का प्रकाश विविधता उत्पन्न करता है, पतझड़ के मौसम से बसंत की बहार का पता चलता है। ठीक उसी प्रकार दुःख और कष्ट से सुख तथा आनंद का रस आता है।

हम सभी के अंदर एवं कठिनाइयों का सामना करने के बजाय उनसे दूर भागने का संस्कार बहुत प्रबल होता है। इसी वजह से उन परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाली अनेक भावनाएं जैसा भय मानसिक पीड़ा से हम लंबे काल तक छूट नहीं पाते।

हम ऐसा क्यों करते है ? क्यों कि हमारी अंतरआत्मा की आवाज जो हमें बार-बार सही रास्ते पर चलने को प्रेरित करती है, उसे डरते रहते है। हमारे भीतर होने वाली हर प्रकार की अनुभूति या संवेदनाओं केंद्र हमारा मस्तिष्क है और इसलिए अधिकतर डॉक्टर्स अपने मरीजों को यह सलाह देते है कि अपने मनोबल को बढ़ाओं, शारीरिक या मानसिक कठिनाईओं से संघर्ष करने की अपनी क्षमता को बढ़ाओं।

परिस्थितियों से भागने ही सोचेंगे तो इससे कोई इससे बेहतर यही होगा की ऊर्जा का उपयोग करके करें यह जीवन जीने का पृथ्वी-जल और हवा का का सही मार्ग समझता है। है तो - जोसेफ नोविस्की दयाट केन चेंज युवर हूँ? मैं यहाँ क्यों हूँ? मैं करता हूँ? और अपने प्रति

के नए-नए रास्तों के बारे में ठोस समाधान नहीं निकलता, हम अपने अंदर दबी निहित समस्याओं का सीधा सामना सही मार्ग है। यदि हम सूर्य-अध्ययन करें तो जीवन जीने कठिनाइओं का सामना करना की पुस्तक “सिक्स क्विश्चयन लाईफ” वे कहते है - मैं कौन कहाँ का हूँ? मैं किससे प्यार सच्चा कैसे हो सकता हूँ । हर प्रश्न का हल आपको करना है। इसी प्रकार इन मुद्दों को जीवन में अपनाना जरूरी है।

> स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना

> दिनचर्या में ध्यान देना

> योग के लिए थोड़ा समय देना

> अपने आपको खुश रखना

> सकारात्मक सोच रखना

> तनावमुक्त रहना

> सत्य को सुनना-समझना और सत्य बोलना

> सबके साथ समभाव रखना

> नए कौशल और शिक्षा को सीखना

> समय का सदुपयोग करना

> अपनी वाणी पर संयम रखना

सत्य अपने लिए रखो, प्रेम दूसरों के लिए और दया सबके लिए, यही जीवन का व्याकरण है।

"समय के माध्यम से ही हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।"

- महात्मा गांधी

संतोष ही मनुष्य का सच्चा धन है।

महेन्द्रपाल शर्मा,
एमटीएस

आज का मानव धन कमाने की इच्छा में इतना लीन हो जाता है कि वह किसी भी प्रकार के संतोष की प्राप्ति नहीं कर पाता है। बेशक हम अपने जीवन में धनवान बन जाते हैं। लेकिन एक समय ऐसा आता है जब हमारे उस धन का कोई अर्थ नहीं रह जाता । उस समय हमें चित्त शांति अर्थात संतोष की आवश्यकता होती है। मन का संतोष ही हमारे लिए सच्चा धन है। क्योंकि मन शांत और संतुष्ट होगा तभी हम अपने जीवन में खुश रह पाएंगे। अगर मन संतुष्ट नहीं होगा तो हम चाहे जितना धन कमालें । हमें संतोष और सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यदि हम अपने मन को शांत करके दो रोटी चटनी से भी खाएँगे तो वह भी हमें बहुत अच्छी लगेगी। यदि हमारा मन शांत नहीं है तो हम कितने भी अच्छे भोजनालय में भोजन ग्रहण करें तब भी हमें संतोष नहीं मिलेगा, इसीलिए कहा जाता है, संतोष ही मनुष्य का सच्चा धन है।

प्रत्येक मानव को अपने जीवम में कठोर परिश्रम करना चाहिए । कड़ी मेहनत से ही मानव का जीवन सफल बनता है। मनुष्य को कभी भी लालच में पड़कर या छल-कपट से धन और यश प्राप्त नहीं करना चाहिए क्योंकि उस धन और यश से मनुष्य कुछ पल के लिए तो खुश हो सकता है, लेकिन हमेशा के लिए नहीं। कुछ लोग घन कमाने के चक्कर में झूठ और छल-कपट में पड़कर अपना जीवन ही बर्बाद कर लेते हैं। ऐसे धन से क्या लाभ जिसमें सुख और शांति न हो। संतोष रूपी धन प्राप्त हो जाने पर ऐसी आनंदमयी दशा हो जाती है, कि जिसमें न ईर्ष्या होती है, न द्वेष न अशांति, न लोभ, न लालच और न असंतोष होता है। जीवन बस सुखी, संतुष्ट, चिंतारहित और आनंद से भरपूर हो जाता है।

संतोष रूपी धन सब प्रकार के धन से श्रेष्ठ है, धूल के समान मानव एक संवेदनशील प्राणी है। उसकी अनेकों इच्छाएँ हैं, जो कभी समाप्त नहीं होती हैं। संतोष में कर्महीनता का नहीं, अपितु कर्मशीलता का भाव है। जो कर्मशील है, वही सच्चे सुख-संतोष का अनुभव करता है। परिश्रम से जो मिले उसी से खुश रहना, और हँसते हुए अगले कर्म में जुट जाना , जो प्राप्त हुआ वही पर्याप्त है और वही संतोष है।

अपने मन को निर्मल बनाने के लिए हमें दूसरों के दुख को महसूस करने की ज़रूरत है।जब हम किसी असहाय और ज़रूरतमंद की मदद करते हैं तो हमें बहुत संतोष और मन को आनंद प्राप्त होता है। हर मानव का यह कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें जैसे कि झूठ न बोलना, किसी के साथ छल-कपट न करना, सच्चाई के रास्ते पर चलना, दीन-दुखियों एवं असहाय लोगों की मदद करना, कठोर परिश्रम करना, अहिंसा के रास्ते पर चलना, सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना,

अपने वेद-पुराणों का ज्ञान अपनी पीढ़ी को देना, अच्छे लोगों को संगत करना, अपने से बड़ों का आदर-सम्मान करना और अपनी मातृभाषा और संस्कृत हिन्दी, उर्दू का ज्ञान देना ताकि विदेशी भाषा हमारे देश और दिमाग पर भारी न पड़े। जो भाव हिन्दी उर्दू भाषा में है, वह कभी अँग्रेजी भाषा में नहीं हो सकता है। और अंत में मैं यही कहूँगा कि -

रूखा-सूखा खायके, ठंडा पानी पी,
देख पराई चुपड़ी, मत ललचावे जी।

यदि आप दृढ़ विश्वास और पूर्णता के साथ काम करेंगे
तो सफलता जरुर मिलेगी.!!
-धीरूभाई अंबानी

राजेश कुमार
निरीक्षक

एक दिन बेटा अपने पिता के पास जाता है और पूछता है कि पिताजी बताइए " मेरे जीवन का मूल्य क्या है? तब उसके पिताजी उसे एक हीरा देते हैं और कहते हैं, अगर तुम अपने जीवन की कीमत जानना चाहते हो, तो इस हीरे के पत्थर को लेकर बाजार जाओ। " अगर यदि कोई कीमत पूछे, तो एक शब्द भी न बोलो और सिर्फ दो उंगलियाँ उठाओ।

लड़का अपने पिताजी की बात मानकर हीरे को लेकर बाज़ार जाता है। वह जानना चाहता है कि उसके जीवन की कीमत क्या है। बाज़ार में एक बूढ़ी औरत उसके पास आती है और पूछती है, " यह हीरा कितने का है? " लड़का कुछ नहीं बोलता है, बस दो उंगलियाँ उठाता है, और औरत कहती हैं, ' दो डॉलर', ठीक है, "मैं इसे ले लूँगी। "

बेटा हैरान हो जाता है और वापस अपने पिताजी के पास दौड़ता हुआ जाता है और उन्हें बताता है कि बाजार में एक बूढ़ी औरत हीरे के बदले में मुझे दो डॉलर देना चाहती है । पिताजी बेटे को हीरे को लेकर संग्रहालय के पास जाने की सलाह देते हैं और बोलते हैं कि अगर कोई कीमत पूछे तो एक शब्द भी न बोलो और सिर्फ दो उंगलियां उठाओ । बेटा हीरे को लेकर संग्रहालय के पास जाता है। कुछ देर बाद एक सूट पहने मध्यम आयु वर्ग का आदमी आता है और लड़के से पूछता है कि, यह हीरे कितने का है। लड़का बिना कुछ बोले सिर्फ दो उंगलियां उठाता है और वह व्यक्ति पूछता है कि क्या यह 200 डॉलर का है । मैं इसे ले लूंगा। लड़का हैरान होता है और अपने पिताजी के पास दौडता हुआ जाता है। वह पिताजी से बताता है कि संग्रहालय में एक आदमी 200 डॉलर में हीरे के टुकडे को खरीदना चाहता है। ठीक है बेटा, अब मैं चाहता हूं कि तुम हीरे को लेकर कीमती हीरे की दुकान जाओ।

बेटा हीरे को लेकर कीमती हीरे की दुकान में जाता है । अंदर जाकर वह काउंटर पर एक बूढ़े आदमी को हीरा देता है। जैसे ही बूढ़ा आदमी ने हीरे को देखता है , वह उछल पड़ता है और चिल्लाता है, हे भगवान, तो तुम्हारे पास वह हीरा है जिसे मैं अपनी पूरी ज़िंदगी ढूंढ़ रहा हूँ, तुम इसके बदले में क्या चाहते हो? यह कितने का है? लड़का एक शब्द भी नहीं बोलता है और सिर्फ दो उंगलियाँ ऊपर उठाता है। बूढ़ा आदमी कहता है दो लाख डॉलर। मैं इसे ले लूँगा। लड़का इस पर यकीन नहीं कर पाता है। वह हैरान होकर अपने पिताजी के पास जाता है और उन्हें बताता है। कीमती हीरे की दुकान पर बूढ़ा आदमी मुझे हीरे के बदले दो लाख डॉलर देना चाहता है।

पिताजी उसे कहते हैं कि बेटा, अब समझ में आया तुम्हें कि तुम्हारे जीवन का मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि तुम खुद को कहां रखते हो। तुम तय कर सकते हो कि तुम दो डॉलर का हीरा बनना चाहते हो या दो लाख डॉलर हीरे का । कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे तुमसे प्यार करेंगे और जिनके लिए तुम सब कुछ हो, और कुछ लोग तुम्हें सिर्फ़ एक वस्तु की तरह इस्तेमाल करेंगे, और उनके लिए तुम कुछ भी नहीं होगे, इसलिए मेरे बेटे यह तुम पर निर्भर है, कि तुम अपने जीवन का मूल्य स्वयं तय करो।

याद रखिये सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना
और गलत के साथ समझौता करना है.
- सुभाष चंद्र बोस

हिन्दी कार्यशालाएं - प्रत्येक तिमाही में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला चलाई गई। वर्ष के दौरान इन कार्यशालाओं में कुल 119 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

हिंदी प्रशिक्षण - अकादमी में कर्मचारियों को पारंगत करने हेतु हिंदी शिक्षण योजना द्वारा चलाए गए पारंगत पाठ्यक्रम की कक्षाएं आयोजित की गई जिसमें वर्ष के दौरान 26 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

पत्र-पत्रिकाएँ - अकादमी द्वारा प्रकाशित अकादमी जर्नल, न्यूज लैटर हिन्दी अंगेजी के मिलेजुले रूप में प्रकाशित होते हैं। "स्मारिका केवल हिन्दी में प्रकाशित होती है।

निदेशक महोदय अकादमी की हिन्दी पत्रिका का विमोचन करते हुए

अध्ययन सामग्री द्विभाषी रूप में उपलब्ध करवाना - भारतीय पुलिस सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों को सम्पूर्ण सामग्री द्विभाषी उपलब्ध कराई जाती है। परीक्षा में सभी प्रश्न-पत्र द्विभाषी उपलब्ध कराये गए एवं हिन्दी में उत्तर लिखने की छूट दी जाती है। कुल 167 भारतीय पुलिस सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों में से 12 प्रशिक्षु अधिकारियों ने सभी लिखित परीक्षाओं के उत्तर हिन्दी में दिये। सभी प्रशिक्षु अधिकारियों की हिन्दी ज्ञान परीक्षा ली गई तथा जो अधिकारी इस परीक्षा में असफल रहे उनके लिए हिन्दी कक्षाओं का संचालन किया गया है। इस वर्ष 11 सदस्यों को हिन्दी का भाषा प्रशिक्षण

प्रदान किया गया । इसके अतिरिक्त सभी सदस्यों भाषा एवं प्रशासनिक शब्दावली का प्रशिक्षण दिया जाता है।

राजभाषा पखवाड़ा - दिनांक 17.09.2024 से दिनांक 30.09.2024 तक राजभाषा माह मनाया गया। जिसके अंतर्गत अकादमी स्टाफ हेतु निम्नलिखित प्रतियोगिताएं जैसे - हिन्दी निबंध लेखन, तकनीकी शब्दावली, प्रश्नोत्तरी, स्मृति परीक्षा, हिन्दी श्रुतलेखन, मुहावरा लिखो एवं टिप्पण एवं प्रारूपण एवं हिन्दी में कामकाज प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई जिसमें लगभग 176 कर्मचारियों ने भाग लिया एवं कुल 60 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

नराकास से प्राप्त शील्ड - अकादमी द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप हैदराबाद-सिकंदराबाद में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय में वर्ष 2023-24 के दौरान अकादमी को में सर्वाधिक कार्य करने के उपलक्ष्य में शील्ड प्रदान की गई। साथ ही सर्वोत्तम वार्षिक हिंदी पत्रिका के लिए भी शील्ड प्रदान की गई।

सहायक निदेशक श्री अजित प्रताप सिंह महा प्रबंधक, दमरे एवं नराकास के अध्यक्ष से पुरस्कार प्राप्त हुए करते

अकादमी सम्मेलन का आयोजन - प्रत्येक छमाही में स्टाफ हेतु अकादमी पुलिस सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी पूरी कार्यवाही हिन्दी में प्रस्तुत की गई।

माइकलएंजलो से एक बार पूछा गया,
'आप इतनी जीवंत मूर्तियां कैसे बनाते हैं,
'खुरदुरे संगमरमर में मूर्तियां तो पहले से ही होती है',
माइकलएंजलो ने कहा, 'केवल इन्हें तराशना भर होता है',
आपके अंदर एक होनहार अफसर पहले से ही मौजूद है,
हमें उसे निखारने में मदद कीजिए ।

दीक्षांत परेड के अवसर पर माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय 76 आरआर बैच के आईपीएस अधिकारियों को संबोधित करते हुए

दीक्षांत परेड के अवसर पर अकादमी के निदेशक श्री अमित गर्ग 76 आरआर बैच के आईपीएस अधिकारियों को संबोधित करते हुए

सत्यमेव जयते

सत्यं सेवा सुरक्षणम्

सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी